1 भारतीय समाज : पारिभाषिक शब्दावली (Indian Society : Terminology)

मनुष्य (Mortal)

एक विवेकशील एवं सृजनशील प्राणी जिसमें दो पैरों पर खड़ा होने और हाथों की विशिष्ट बनावट के कारण संस्कृति एवं सभ्यता के निर्माण की क्षमता होती है।

समाज (Society)

सामान्यत: समाज को व्यक्तियों का एक ऐसा समूह माना जाता है, जिनकी एक साझा संस्कृति होती है, इस समूह के व्यक्ति एक निश्चित क्षेत्र में रहते हैं और एक अलग संगठित इकाई के रूप में अपने आपको कुछ बंधनों में बँधा हुआ अनुभव करते हैं। कुछ समाजशास्त्री समाज को व्यक्तियों का समूह या कोई संकलन नहीं मानते हैं, वे इसे सामाजिक संबंधों की एक ऐसी अमूर्त व्यवस्था मानते हैं जिसमें हम रहते और जीते हैं।

सामाजिक मूल्य (Social Value)

मूल्य वे सांस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत धारणाएँ व आदर्श हैं जिनके द्वारा वस्तुओं और घटनाओं की एक-दूसरे के साथ तुलना की जाती है। ये वे कसौटियाँ और व्यवहार के पैमाने हैं जिनके आधार पर अच्छे-बुरे, वांछित-अवांछित, सही-गलत, करणीय और अकरणीय का निर्णय दिया जाता है, जैसे-न्याय, स्वतंत्रता, देश भक्ति, अहिंसा, ईमानदारी सच्चाई आदि।

सामाजिक मानदंड (Social Standard)

समाज के समाजोनुमोदित तरीकों अथवा नियमाचारों को सामाजिक मानदंड कहते हैं। किसी विशिष्ट सामाजिक स्थिति में व्यक्ति द्वारा किस प्रकार का व्यवहार उपयुक्त होगा यह सामाजिक मानदंडों द्वारा निर्धारित होता है।

संस्कृति (Culture)

संस्कृति उन सभी व्यवहार प्रतिमानों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक सामूहिक शब्द है जो सामाजिक रूप से अर्जित तथा सामाजिक रूप से हस्तांतरित किए जाते हैं। संस्कृति संचरण औपचारिक अथवा अनौपचारिक सीखने अथवा प्रशिक्षण दोनों प्रक्रियाओं द्वारा होता है अर्थात् संस्कृति हमारे रहन-सहन तथा सोचने समझने की शैली में हमारे प्रतिदिन की बातचीत में, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद में हमारे स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

सभ्यता (Civilization)

संस्कृति का वह पक्ष जो भौतिक वस्तुओं अथवा शिल्प तथ्यों या ऐसी वस्तुओं से बना हेाता है, जिन्हें अभौतिक संस्कृति कोई अर्थ अथवा महत्त्व प्रदान करती है, सभ्यता कहलाती है। मानव ने अपनी सुख-सुविधा और प्रकृति से अपनी आत्मरक्षा करने के लिए जिन वस्तुओं का सृजन किया है, वे सभी सभ्यता के भाग हैं, जैसे- मकान, अस्त्र-शस्त्र वस्त्र, आभूषण, कल-कारखाने आदि।

परंपरा (Tradition)

परंपरा, परिपाटियों का एक पुंज है, जो कुछ व्यवहार संबंधी मानदंडों और मूल्यों जो इस आधार पर अपनाए जाने या संपन्न किए जाने पर बल देते हैं कि इनका वास्तविक या काल्पनिक भूत के साथ तारतम्य है। बहुधा इन परंपराओं के साथ व्यापक रूप से स्वीकृत कर्मकाण्ड या प्रतीकात्मक व्यवहार के अन्य स्वरूप जुड़े होते हैं। परंपरा में हस्तान्तरण या संचरण की प्रक्रिया निहित होती है, जिसके द्वारा एक समाज अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखता है।

आधुनिकता (Modernity)

बुद्धिवाद और उपयोगितावाद के दर्शन पर आधारित सोचने समझने और व्यवहार करने के ऐसे तौर-तरीकों को सामान्यत: आधुनिकता कहा जाता है जिसमें प्रगति की आकांक्षा, विकास की आशा और परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको ढालने का भाव निहित होता है। आधुनिकता की कई विशेषताएँ बताई गई हैं, जैसे- परानुभूति, वैज्ञानिक विश्वदृष्टि, अमूर्तिकरण, भविष्योन्मुखता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण, धर्मनिरपेक्षता, वैयक्तिकता, मुक्ति, उन्नत एवं परिष्कृत प्रौद्योगिकी आदि आधुनिकता के प्रमुख लक्षण हैं। आधुनिकता बुद्धिवादी बनने, अंधविश्वासों से बाहर निकलने, नैतिकता में उदारता बरतने की एक प्रक्रिया है।

पारंपरिक समाज (Traditional Society)

पारंपरिक समाज अपेक्षाकृत धीमी गति से परिवर्तित होने वाला एक ऐसा समाज होता है जिसमें सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण अधिकांशत: जन्म, नातेदारी, आयु, जाति-प्रजाति के आधार पर होता है। ऐसे समाज में मूल्यों की एक अधिक समरूप संरचना देखने को मिलती है जिसमें विशेषीकरण कम से कम होता है, सामान्यत: सामाजिक ढाँचा सत्तावादी होता है और अधिकांशत:

ऐसे समाज भूमिगत कुलीनतंत्र वाली व्यवस्था लिए होते हैं। पारंपरिक समाज के व्यक्ति पारलौकिक विचार एवं भाग्यवादी मूल्य-व्यवस्था, रूढ़िगत धार्मिक आस्था और विश्वास, जिसमें तार्किकता का अभाव होता है, से निर्देशित होते हैं।

आधुनिकीकरण (Modernisation)

आधुनिकीकरण राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक विकास की एक ऐसी मिली-जुली पारस्परिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ऐतिहासिक तथा समकालीन अविकसित समाज अपने आपको विकसित करने में संलग्न रहते हैं। जहाँ कहीं, जब कभी और जिस किसी संदर्भ में इसकी उत्पत्ति हुई, इसकी मूल आत्मा तार्किकता, वैज्ञानिक भावना तथा परिष्कृत तकनीक से जुड़ी रही है। परिवर्तन की एक विशिष्ट प्रक्रिया के रूप में आधुनिकीकरण एक विशिष्ट वांछित प्रकार की तकनीक तथा उससे संबंधित सामाजिक संरचना, मूल्य-व्यवस्था, प्रेरणाओं तथा आदर्श-नियमाचारों का एक पुंज है, जो पारंपरिकता से भिन्न होता है।

पश्चिमीकरण (Westernization)

पाश्चात्य संस्कृति के संघात के द्वारा उत्पन्न परिवर्तन की सामाजिक प्रक्रिया (संपूर्ण जीवन शैली एवं विचार व्यवस्था) को पश्चिमीकरण की संज्ञा दी गई है। भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में एम.एन. श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण शब्द का प्रयोग ब्रिटिश राज्य के 150 वर्षों के शासन के परिणामस्वरूप भारतीय समाज व संस्कृति में उत्पन्न हुए परिवर्तनों के लिए किया है। पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण शब्दों को कई बार पर्यायवाची के रूप में एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर लिया जाता है। किंतु तार्किक दृष्टि से यह ठीक नहीं है। आधुनिकीकरण की अवधारणा पश्चिमीकरण से अधिक व्यापक है। इसमें सभी गैर पश्चिमी देशों या पश्चिमी देशों के द्वारा लाए गए परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है।

औद्योगिक समाज (Industrial Society)

अति सरल अर्थ में, औद्योगिक समाज से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था से है, जिसमें उत्पादन की विधि के रूप में शक्ति संचालित मशीनों का प्रयोग किया जाता है और जिसमें उद्योगवाद की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं। इस प्रकार के समाज की प्रमुख विशेषताएँ यंत्रीकरण श्रम-विभाजन, विशेषीकरण तथा इनके साथ जुड़े हुए कुछ अन्य परिवर्तन हैं जिनमें प्रमुखतः संचार के साधनों तथा परिवहन के उन्नत रूपों का प्रयोग, बढ़ता हुआ शहरीकरण, वृहत बाजार प्रणाली, प्रव्रजन, उपभोग की आदतों में परिवर्द्धन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। उद्योगवाद ने इस प्रकार के सामाजिक जीवन को विकसित किया है जिसमें अनजानपन, निर्वैयक्तिकता, प्राथमिक संबंधों तथा प्राथमिक नियंत्रण प्रणाली का ह्रास, द्वितीयक समूहों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई भूमिका आधुनिक औद्योगिक समाज का पर्याय बनते जा रहे हैं।

उत्तर औद्योगिक समाज/उत्तर उद्योगवाद (Past Industrial Society)

उत्तर औद्योगिक समाज या उत्तर उद्योगवाद एक ऐसा विचार है जिसका प्रतिपादन उन व्यक्तियों द्वारा किया गया है जो यह मानते हैं कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया हमें औद्योगिक समाज के परे एक ऐसे समाज की ओर ले जा रही है जो भौतिक वस्तुओं के उत्पादन की अपेक्षा सूचनाओं के उत्पादन पर आधारित है। आज जो परिवर्तन हो रहा है वह एक नए समाज की ओर संक्रमण का संकेत देता है। यह नया समाज अब उद्योगवाद पर आधारित नहीं है। इस नई व्यवस्था के लिए कई शब्दों यथा सूचना समाज, सेवा समाज या ज्ञान समाज का प्रयोग किया गया है। कुछेक विद्वानों का मत है कि हम औद्योगिक विकास के पुराने रूपों से परे बढ़ रहे हैं, अतः इसके लिए 'उत्तरकालीन' (पोस्ट) सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है। इसी आधार पर उत्तर औद्योगिक समाज, उत्तर आधुनिक समाज और उत्तर अभावग्रस्त (scarcity) समाज जैसे संबोधनों का प्रयोग हुआ है।

कृषिक/कृषिहर समाज (Forming Society)

ऐसा समाज जिसके व्यक्तियों के जीविकोपार्जन का प्रमुख धंधा कृषि या कृषि पर केन्द्रित अन्य धंधे होते हैं, उसे कृषिहर समाज कहा जाता है। कृषिहर समाज निश्चित तौर पर आखेटक-संग्राहक समाज और बागवानीय समाज से भिन्न होते हैं। जहाँ आखेटक-संग्राहक समाज में किसी प्रकार का उत्पादन नहीं किया जाता, वहाँ बागवानीय समाजों में भोज्य सामग्री का उत्पादन बड़े-बड़े खेतों की अपेक्षा छोटे-छोटे बाग-बगीचों में किया जाता है।

धर्मनिरपेक्ष समाज (Secular Society)

ऐसा समाज जिसमें उपयोगितावादी तथा तर्क संगत मूल्यों पर अधिक बल दिया जाता है तथा जो परिवर्तन तथा नवाचारों को प्रश्रय देता है, लौकिक अथवा धर्मनिरपेक्ष समाज कहलाता है। इस प्रकार के समाज में धर्म के आधार पर कोई भेद-भाव नहीं किया जाता है। अधि-दैविक मूल्यों तथा परंपरावाद एवं रूढ़िवाद को हेय दृष्टि से देखा जाता है तथा तर्क एवं वैज्ञानिक दृष्टि को महत्त्व प्रदान किया जाता है।

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)

किसी सामाजिक व्यवस्था में प्रतिष्ठा, प्रभाव, शक्ति, सम्पत्ति तथा सुविधाओं आदि की भिन्नता के आधार पर प्रस्थितिओं एवं भूमिकाओं की एक अपेक्षाकृत स्थाई श्रेणीबद्धता को सामाजिक

स्तरीकरण कहते हैं। यह एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक विभेदीकरण की एक व्यवस्था है, जिसमें सामाजिक पदों की ऊँच-नीच पर आधारित श्रेणीबद्धता होती है। इन सामाजिक पदों के धारक सामजिक महत्त्व की दृष्टि से एक-दूसरे से उच्चता, समानता अथवा निम्नता का व्यवहार करते हैं। इसका प्रमुख तत्व 'श्रेणीबद्ध संस्तरण' है। यह संस्तरण असमानता या विषमता को जन्म देता है। जाति-व्यवस्था, वर्ग-व्यवस्था तथा सम्पत्ति व्यवस्था, दास प्रथा सामाजिक स्तरीकरण के प्रमुख रूप हैं।

जाति (Caste)

जाति समान पारम्परिक (आनुवंशिक) पेशे वाला एक ऐसा अन्तर्विवाही समूह है जिसकी सदस्यता जन्म से निश्चित होती है तथा जिसके सदस्य सामाजिक व्यवहार, खान-पान सामाजिक धार्मिक संस्कार आदि के मामलों में कुछ निश्चित प्रतिबंधों का पालन करते हैं। जाति भारतीय हिन्दुओं के संपूर्ण जीवन को नियमित एवं प्रभावित करती है। इसका उद्गम चातुर्वर्ण्य विभाजन (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) अर्थात् वर्ण-व्यवस्था ही रहा है। स्वतंत्रता के बाद (सन् 1947) भारतीय सरकार ने संवैधानिक प्रावधानों और कानूनों द्वारा इस संस्था को समाप्त करने का प्रयास किया है, किन्तु प्रजातंत्रात्मक राजनीति ने इस संस्था को नष्ट करने के स्थान पर अधिक मजबूत बना दिया।

वर्ग (Category)

एक वर्ग व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जिनकी किसी समाज में समान आर्थिक स्थिति होती है। मार्क्सवादी धारणा के अनुसार वर्ग ऐसे लोगों का एक समूह है, जिनकी उत्पादन की प्रणाली के आधार पर समान प्रस्थिति होती है और जो राजनीतिक शक्ति-संरचना के साथ साझे रूप में जुड़े होते हैं। वर्ग-व्यवस्था आधुनिक औद्योगिक समाजों (खुले समाज) की एक विशेषता है, जिसका आधार अर्जित प्रस्थिति है। यह व्यक्तिगत उपलब्धि पर निर्भर करती है। इस व्यवस्था में शीर्ष गतिशीलता संभव है।

सामाजिक गतिशीलता (Social mobility)

किसी समाज की सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था में सामान्यत: व्यक्तियों और कभी-कभी किसी संपूर्ण समूह की भिन्न पद प्रस्थितियों के बीच होने वाले संक्रमण/परिवर्तन को सामाजिक गतिशीलता कहते हैं। अत्यंत साधारण अर्थों में आय के बढ़ने या घटने के कारण किसी व्यक्ति का एक वर्ग से दूसरे वर्ग में प्रवेश की स्थिति सामाजिक गतिशीलता को इंगित करती है। सामाजिक गतिशीलता सामाजिक जगत् में पद प्रस्थिति या प्रस्थिति संस्तरण में होने वाले परिवर्तनों का संकेत देती है। यह जरूरी नहीं है कि इस प्रकार के परिवर्तनों से संपूर्ण संस्तरण व्यवस्था में ही कोई संरचनात्मक परिवर्तन होता है।

नातेदारी (Relation)

सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त ऐसे संबंधों को नातेदारी या स्वजनता कहा जाता है, जो रक्त, विवाह अथवा दत्तकता पर आधारित होते हैं। नातेदारी व्यवस्थाएँ माता-पिता और संतानों के बीच, सहोदरों (भाई-बहनों) के बीच तथा वैवाहिक दम्पतियों के बीच जैविकीय संबंधों के प्रतिरूप के अनुसार व्यक्तियों और समूहों के बीच संबंध स्थापित करते हैं।

सभी समाजों में परिवार और नातेदारी समूहों को परिभाषित करने तथा इन संबंधों को किस प्रकार संगठित किया जाएगा, इसके बारे में सामान्य मानदंड होते हैं। कौन व्यक्ति साथ-साथ रह सकते हैं, समूह का मुखिया कौन है, कौन किसके साथ विवाह कर सकता है, जीवन साथी का चुनाव कैसे होता है, परिवार और नातेदारी समूह में कौन से संबंधी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और बालकों का पालन पोषण कैसे और किसके द्वारा किया जाएगा आदि सभी विषयों के बारे में मानदंड होते हैं। इन मानदंडों के बारे में अलग-अलग समाजों में काफी भिन्नता है, फिर भी कुछ ऐसे सामान्य मानदंड होते हैं जो परिवार के सदस्यों की प्रस्थितियों और भूमिकाओं का निर्धारण करते हैं।

परिवार (Family)

परिवार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, जो विवाह, रक्त अथवा दत्तक बंधनों से बंधा होता है। इसके द्वारा एक गृहस्थी की रचना होती है। इसके सदस्य पति-पत्नी माता-पिता भाई-बहन की सामाजिक भूमिकाओं में एक दूसरे से अंतर्क्रिया तथा अंतर्संप्रेषण करते हुए एक सामान्य संस्कृति की रचना करते हैं। विस्तृत अर्थों में परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें दत्तक व्यक्तियों सहित कुछ वैवाहिक एवं रक्त संबंधी सम्मिलित होते हैं तथा जिसे एक सामाजिक इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त होती है।

विवाह (Marriage)

पारंपरिक रूप से, विवाह दो या दो से अधिक विषमलिंगियों के बीच समाजोनुमोदित, औपचारिक तथा अपेक्षाकृत स्थाई लैंगिक संबंधों की एक व्यवस्था एवं नियमाचारों का एक पुंज है, जो पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक पारस्परिक दायित्वों एवं अधिकारों द्वारा इन्हें एक सूत्र में बांधता है। जैवकीय दृष्टि से विवाह की संस्था का उद्भव मानव की प्रजनन तथा बालकों के लालन-पालन की मूलभूत आवश्यकताओं को लेकर हुआ प्रतीत होता है। वास्तव में संभोग (सेक्स) तथा पितृत्व दोनों का संयोग मानवीय विवाह का मूलाधार रहा है।

आर्थिक व्यवस्था (Economic System)

भौतिक वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं वितरण की व्यवस्था को आर्थिक व्यवस्था कहा जाता है। आर्थिक व्यवस्था के उद्विकासक्रम को निम्न रूप में देखा जा सकता है:-

1. खाद्य संकलन एवं शिकारी अर्थव्यवस्था
2. पशुपालन अर्थव्यवस्था
3. कृषि अर्थव्यवस्था
4. औद्योगिक अर्थव्यवस्था

शक्ति (Power)

मानव पर प्रभुत्व करने, भयभीत करने तथा नियंत्रित करने, आज्ञा पालन करवाने, उनकी स्वतंत्रताओं में हस्तक्षेप करने तथा उनके व्यहार को एक विशिष्ट दिशा में मोड़ने के लिए बाध्य करने की योग्यता अथवा सत्ता को शक्ति कहते हैं। शक्ति स्तरीकरण (स्ट्रैटिफिकेशन) की एक मूलभूत अवधारणा है, जिसके वर्ग, प्रस्थिति और दल तीन पृथक (कभी कभी संबंधित) आयाम हैं। शक्ति एक व्यक्ति की अपनी इच्छाओं की पूर्ति की क्षमता है, चाहे दूसरे व्यक्ति इसका विरोध करते हों।

सत्ता (Existence/Power)

दूसरे व्यक्यिों के व्यवहारों को व्यवस्थित (नियंत्रित) करने तथा उनके संबंध में निर्णय लेने के प्रस्थापित अधिकार को या शक्ति के वैधतायुक्त प्रयोग को सत्ता कहते हैं। यह शक्ति के प्रयोग के प्रमुख रूपों में से एक है, जिसमें अनेक व्यक्तिगत मानवीय कर्ताओं की क्रियाओं को आदेशात्मक तरीके से निर्देशित किया जाता है ताकि किसी विशिष्ट लक्ष्य अथवा सामान्य लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। मैक्स वेबर ने सत्ता की विवेचना शक्ति के रूप में की है और उन्होंने सत्ता के तीन रूपों की चर्चा की है- पारस्परिक सत्ता, तार्किक कानूनी सत्ता और करिश्माई सत्ता।

राज्य (State)

समाज का वह पक्ष अभिकरण अथवा संस्था, राज्य के नाम से जानी जाती है जिसे किसी निर्दिष्ट भू-क्षेत्र पर शारीरिक शक्ति के प्रयोग का वैधानिक एकाधिकार प्राप्त होता है। राज्य सरकार तथा देश में अंतर है। देश व्यक्तियों का एक स्वायत्तता प्राप्त राजनीतिक संगठन होता है। सरकार व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जिसे राज्य के प्रयोजनों को पूरा करने का दायित्व सौंपा गया होता है तथा इन दायित्वों को निभाने के लिए उसे सभी अधिकार प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत राज्य के अंतर्गत शक्ति प्रयोग संबंधी सभी संस्थाएँ, परिपाटियाँ, परंपराएँ तथा राजनीतिक साधन जैसे संविधान एवं चार्टर आदि सम्मिलित किए जाते हैं।

सरकार (Government)

कानून नामक संस्थात्मक क्रिया को संपादित करने वाली समिति को सरकार की संज्ञा दी जाती है। इस समिति की रचना पूरे समाज या इसके किन्हीं प्रतिनिधियों द्वारा होती है जिसका कार्य कानून बनाना, कानून लागू करना तथा न्याय की व्यवस्था करना होता है।

राजतंत्र (Monarchy)

राजनैतिक व्यवस्था का वह रूप जहाँ राज्य की शक्ति किसी व्यक्ति विशेष के पास केन्द्रित होती है। यह शक्ति उसको विरासत में प्राप्त होती है तथा वह अपनी अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित कर देता है और राजा द्वारा इस शक्ति के उपभोग करने के अधिकार को धर्म के आधार पर वैध ठहराया जाता है।

लोकतंत्र (Democracy)

प्रजातंत्र या लोकतंत्र एक दर्शन, आदर्शों का एक पुंज या एक सामाजिक- राजनीतिक प्रणाली है जो कि समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को मानव प्राणी के नाते अपने व्यक्तित्व के आधार पर समुदाय की गतिविधियों में भाग लेने तथा समानुपातिक रूप से उन पर नियंत्रण स्थापित करने पर बल देती है। एक शासन प्रणाली के रूप में लोकतंत्र में सत्ता का केंद्रीकरण जनता के हाथों में होता है। शाब्दिक दृष्टि से भी प्रजातंत्र का अर्थ जनता की सत्ता है। जनता अपने चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा समाज पर शासन-प्रशासन करती है। लोकतंत्र एक ऐसे शासन का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें अब्राहम लिंकन के अनुसार सरकार जनता की जनता के द्वारा, जनता के लिए होती है।

धर्म (Religion)

टायलर के अनुसार, धर्म देवी-देवताओं तथा अन्य अधि मानवीय प्राणियों जैसे पूर्वज अथवा आत्माओं के प्रति विश्वास तथा उनसे संबंधित कर्मकाण्ड की एक व्यवस्था है। दुर्खीम के अनुसार धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वास तथा कर्मकाण्डों की एक संगठित व्यवस्था है, जो उन व्यक्तियों को एक एकल सामाजिक नैतिक समुदाय में बाँधता है जो इसका अनुसरण करते हैं। सामान्य रूप में, धर्म मानवीय जीवन के अज्ञात एवं अज्ञेय पक्षों जैसे जीवन, मृत्यु और उसके अस्तित्व के रहस्यों को जानने तथा उनके साथ व्यवहार करने का एक तरीका है। यही नहीं, धर्म नैतिक निर्णयों को लेने की प्रक्रिया में उत्पन्न कठिन असमंजस की स्थिति में उसकी सहायता भी करता है।

पंथ/संप्रदाय (Sect)

एक संप्रदाय धार्मिक रूप से सक्रिय व्यक्तियों का एक सामाजिक समूह होता है जिनके विश्वास विशिष्ट रूप से रहस्यता, व्यक्तिवादी एवं समन्वयात्मक होते हैं। इसकी सदस्यता ऐच्छिक होती है तथा इसका कोई भी औपचारिक संगठन नहीं होता है।

विज्ञान (Science)

मानवीय ज्ञान संबंधी समस्याओं का एक दृष्टिकोण विज्ञान के नाम से जाना जाता है जिसके द्वारा आनुभविक प्रेक्षण (इंद्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव) के आधार पर असीमित वर्ग की घटनाओं के संबंध में सामान्य सिद्धांत खोजने का प्रयास किया जाता है। विज्ञान से तात्पर्य ऐसे व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ ज्ञान से है जिसका सत्यापन इंद्रियों के माध्यम से किया जाना संभव है। विज्ञान को जब एक पद्धति के रूप में परिभाषित किया जाता है तब विज्ञान का अर्थ ज्ञान प्राप्ति की एक व्यवस्थित पद्धति से होता है।

सामाजिक परिवर्तन (Social Change)

किसी समाज की सामाजिक संरचना (सामाजिक संबंधों का तानाबाना) अथवा सामाजिक संगठन संस्थानों और सामाजिक भूमिकाओं अथवा समाज के अन्य उपादानों में समय अंतराल के साथ होने वाले बदलाव और परिष्करण की प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन कहते हैं। यह अवधारणा किसी समाज के किन्हीं लघु समूहों में हुए छुट-पुट बदलाव की अपेक्षा वृहद् सामाजिक प्रणाली या संपूर्ण संबंधों की व्यवस्था में आए व्यापक बदलाव को इंगित करती है।

विकास (Development)

विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक देश के अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक रहन-सहन के स्तर, स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने के साथ-साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते हैं। व्यापक अर्थों में, वांछित लक्ष्यों की ओर बढ़ने का नाम ही विकास है, किंतु इसमें प्रयुक्त साधनों और यंत्रों का भी उतना ही महत्त्व है, जितना लक्ष्य का। सार रूप में किसी समाज की विद्यमान दशा में कुछ सकारात्मक प्रगति का नाम विकास है। विकास किसे कहा जाए, इसकी धारणा एक समाज से दूसरे समाज में बदलती रहती है। मोटे रूप में विकास के तीन प्रमुख प्रतिरूपों का प्रयोग किया गया है- 1. पूँजीवादी या उदारवादी मॉडल, 2. समाजवादी या मार्क्सवादी मॉडल तथा 3. मिश्रित मॉडल।

विचारधारा (Ideology)

विश्व, समाज तथा मानव के प्रति देखने का दृष्टिकोण तथा विचारों की एक संपूर्ण व्यवस्था जिसकी प्रामाणिकता का परीक्षण प्रत्यक्षात्मक विज्ञानों के दायरे से परे होता है विचारधारा कहलाती है। विचारधाराएँ विचारों, अनुमानों और कल्पनाओं का एक समूह होती हैं जो सही हो भी सकती हैं और नहीं भी। ये सामाजिक घटनाओं को सरल बनाने और उन्हें समझने में हमारी सहायता करती हैं। फासीवाद, साम्यवाद और पूँजीवाद बीसवीं सदी की तीन प्रमुख विचारधाराएँ रही हैं।

मानववाद (Humanism)

मानव की गरिमा की पुनर्स्थापना, मानवीय प्रतिष्ठा एवं मानवीय हित के सर्वतोमुखी विकास तथा सामाजिक जीवन हेतु अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण की धारणा के आधार पर विकसित विचारधारा को मानववाद का नाम दिया गया है। इस विचारधारा का जन्म मूलतः शोषण एवं सामाजिक बुराई के विरोध स्वरूप हुआ। मानववादी दृष्टिकोण मानव को मानव के नाते समुचित महत्त्व देने पर बल देता है। 'सभी मानव समान हैं', इस विचारधारा का मूलमंत्र है।

उदारवाद (Liberalism)

एक विचारधारा जो व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा कल्याण के महत्त्व में विश्वास करती है तथा जो इस बात पर बल देती है कि सामाजिक प्रगति और जीवन में गुणात्मक सुधार सामाजिक संगठन में परिवर्तन तथा नवाचारों द्वारा ही संभव है। इस विचारधारा ने प्रजातंत्र के विकास सार्वभौमिक मताधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, दास प्रथा की समाप्ति तथा नागरिक अधिकारों में वृद्धि का समर्थन किया। यह विचारधारा सरकार अथवा समृद्ध वर्ग द्वारा व्यक्तियों पर प्रभुत्व या किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप का प्रतिकार करती है।

उपयोगितावाद (Utilitarianism)

एक नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांत जो इस बात पर बल देता है कि समस्त मानवीय आचरण तथा नियमों की उपयुक्तता की जाँच का एक मात्र उद्देश्य अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख होना चाहिए। यह सिद्धांत बेंथम तथा जॉन स्टूअर्ट मिल के नाम के साथ जुड़ा हुआ है, जिनकी दृष्टि में दुःख की अपेक्षा सुख ही जीवन का मूलमंत्र है। उपयोगिता ही अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख है। उपयोगिता को बढ़ाना ही मानव प्राणी के

जीवन का यथोचित लक्ष्य है। मानवीय जीवन का यह दर्शनिक उपागम तार्किक सोच वाले व्यक्ति की महत्ता पर बल देता है। इस उपागम द्वारा यह माना जाता है कि मानव जीवन के अस्तित्व का मूलमंत्र बुद्धिसंगत स्वहित है।

समूहवाद/सामूहिकतावाद (Collectivism)

एक ऐसी विचारधारा जो व्यक्तिगत हित के बजाय समाज या समूह के हितों की पूर्ति पर बल देती है।

व्यक्तिवाद (Individualism)

यह एक ऐसा सिद्धांत है जो साधन अथवा साध्य या स्वार्थपरता अथवा परार्थ के रूप में अकेले व्यक्ति की महत्ता अथवा श्रेष्ठता पर बल देता है। राजनीतिक सिद्धांत के रूप में, व्यक्तिवाद, व्यक्ति की स्वतंत्रता, गरिमा तथा हितों की हामी एक ऐसा दृष्टिकोण है जो इन्हीं के आधार पर न्याय, राजनीतिक दायित्व तथा जनहितों की तुष्टि की विवेचना करता है।

आदर्शवाद (Idealism)

दार्शनिक विचारधारा का एक दृष्टिकोण जिसके अनुसार ब्रह्माण्ड की व्याख्या पदार्थ अथवा भौतिक वस्तुओं की अपेक्षा विचारों के आधार पर की जाती है। आदर्शवाद के अनुसार यह माना जाता है कि यथार्थता मुख्यतः इस बात में निहित है कि व्यक्ति उसके बारे में सोच-विचार करते हैं और यह सब कुछ मानवीय विचारों और सिद्धांतों पर निर्भर करता है। आदर्शवाद को मार्क्स के भौतिकवाद का विरोधी विचार माना जाता है, जिसके अनुसार यह माना गया है कि बाह्य संसार मानव के मस्तिष्क की उपज है।

✪✪✪✪✪